Indian Streams Reserach Journal
Vol.1,Issue.XII/Jan; 12pp.1-4

ISSN:-2230-7850

Research Papers

" शोधात्मक प्रतिबिम्ब"

डॉ . माधुरी रानडे
76 ग्रेटर तिरूपति कॉलोनी
जी2 गंगाजमुना अपार्टमेन्ट
इन्दौर452001 (म . प्र .)

प्रस्तावना :–

वार्लमन कौतूहल और जिज्ञासा का संसार होता है, इसी अवस्था में उसकी रूचियॉ जागृत होती है और उतार चढाव के कम को पार करती हुई निर्धारित लक्ष्य की और वढती हैं,
वचपन में प्राप्त संस्कारों ने शिक्षा को ही माध्यम वनाया था अपनी मंजिल तक पहुचने के लिये और फिर इसी शिक्षा ने पुस्तकालय की राह दिखायी, स्कूली शिक्षा प्राप्त करते समय लायब्रेरी में जाना आदत का एक हिस्सा वन गया था, लायब्रेरी में तकनीकि ज्ञान और इस ज्ञान को वांटते हुए करीव से देखा था,

तभी से वाल सुलभ मन ने इसी संस्था में अपना भविष्य खोजना प्रारंभ कर दिया था, इस प्रयास को उस समय और वढावा मिला जव महाविद्यालय और विश्वविद्यालयीन शिक्षा के दौरान लायब्रेरी जाना दिनचर्या का एक भाग वन गया, इसी का परिणाम है कि गत 28 वर्षो से पुस्तकालयाध्यचा पद पर कार्य करते हुए 'पुस्तकाय विज्ञान' विषय के एक पक्ष को लेकर शोधकार्य के लिये प्रवर्त हुई, .

"जीवन में सफल होने और नतीजों को हॉसिल करने के लिये तुम्हे तीन प्रमुख शक्तिशाली ताकतों को समझना चाहिए इच्छा आस्था उम्मीदें"
ह्यमहामहीम पूर्व राष्ट्रपति ए . पी . जे कलाम साहव की पुस्तक "अग्नि की उडान" में उदधृत आयार्दुर्रे सालोमन के इसी वाक्यांश ने मुझे प्रेरित किया, ह
जिज्ञासा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति है, कोई भी प्रसंग आने पर वह विषय उसके लिये कौतूहल जागृत करता है और उसके समक्ष एक नया विचार रख देता है, आखिर ऐसा क्यों ऋ इसी का प्रत्युत्तर है उस विषय का कारण जो उसे शोधकार्य करने के लिये प्रेरित करता है,
पुस्तकालय और सूचना विज्ञान एक वृहद विषय है उसके कई स्वरूपों पर शोधकर्त्ताओं ने गहन अध्ययन और चिन्तन मनन कर अपने अथक प्रयासों से उसमें नयी चेतना भरने का प्रशंसनीय कार्य किया है, कहीं पुस्तकालय प्रशासन शोध का विषय वने है तो कही शोधकर्त्ताओं ने पुस्तकालय और सूचना विज्ञान की विभिन्न तकनीकियों यथा सूचीकरण वर्गीकरण संदर्भ सेवा या इन्ही तकनीकियों के आन्तरिक पहलुओं पर विचार किया है, पुस्तक चयन प्रकिया पर भी कार्य हुए है किन्तु मध्यप्रदेश में नित नये खुलने वाले महाविद्यालयीन पुस्तकालयों की परिग्रहण प्रकिया एक नया विषय है क्यों कि प्रत्येक महाविद्यालय ापनी वस्तु स्थिति का मूल्यांकन करने के वावजूद ही पुस्तक परिग्रहण प्रकिया को अंजाम देता है,
चयनित महाविद्यालयों में एक और शासकीय महाविद्यालय हैं तो दूसरी और पूर्ण अशासकीय भी है, मध्येप्रदेश में स्वशासी ह्यआटोनामसह महाविद्यालय भी सकिय है, ऐंसी स्थिति में चयनित प्रकिया के अन्तर्गत इन तीनों प्रकार के महाविद्यालयीन पुस्तकालयों को समल्लित किया गया है, इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक आधार पर जिन पुस्तकालयों ने सौ वर्षा की जीवन यात्रा पूर्णकर आधुनिक परिवेश में अपने को ढोला है उनका भी चयन इस शोध में हुआ है इसके साथ ही चयनित महाविद्यालयीन पुस्तकालयों ग्रामीण और शहरी पुस्तकालय विशेष तकनीकी से परिपूर्ण पुस्तकालय विशेष उदेश्य को लेकर गठित महाविद्यालयीन पुस्तकालय तथा नेक टीम द्वारा ग्रेड प्राप्त पुस्तकालयों को भी सम्मिलित किया गया है,
महाविद्यालयीन पुस्तकालयों का चयन करते समय इस विषय परा विशेष ध्यान दिया गया है कि किसी भी पक्ष से वंचित न रहॅू और वास्तविक और निष्पक्ष तथ्य समक्ष आ सकें जिससे परिग्रहन प्रकिया का आलोचनात्मक अध्ययन सफल हो सकें,
संपूर्ण शोधात्मक कार्य पांच अध्यायों में विभाजित है और निष्कर्ष तथा सुझावों को छठवें अध्याय में सुरक्षित कर दिया गया है,
अध्याय प्रथम पुस्तकालय प्रशासन से सम्वध्द है जिसमें कुछ सैध्दान्तिक विवेचन को प्रस्तुत करते हुए स्वयं के प्रशासनिक अनुभव उकोरे गयें हैं,
दूसरे अध्याय चयनित महाविद्यालयों का इतिहास वता रहा है साथ ही इसमें

पाठकों का पुस्तको के प्रति क्या दुष्टिकोण है इसे बताने की भी चेष्टा की गई है पाठको में विद्यार्थी पाठक और प्राध्यापक पाठक दोनों का समावेश किया गया है जिससे परिग्रहण प्रकिया ह्यपुस्तके कय करने की प्रकियाह को ठोस आधार मिल सकें,

अध्याय तीन में देश की हृदयस्थली कहलाये जाने वाले प्रान्त मध्यप्रदेश के भौगोलिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की व्याख्या इस लिये की गयी है क्यो कि शोध का सपूर्ण क्षेत्र मध्यप्रदेश है,

ज्ञान का निरन्तर विकास ही विषयों परिणित होता है अतः अध्याय चार मे ज्ञान की वृहद व्याख्या करते हुए उसे विषय जगत से आवध्द किया है, यह विषय अपनी निर्माणावस्था पूर्ण करके किस प्रकार ज्ञान जगत में अपनी पहचान बनाते है इसे स्पष्ट करने के लिये पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉ . रंगनाथन के सर्पगति के सिध्दांत की व्याख्या की गयी है,

अध्याय पांच पुस्तक चयन प्रकिया से सम्बध्द है, पुस्तक चयन में महाविद्यालय प्रशासन की भागीदारी कहॉ तक सफल रही है, क्या कठिनाईयॉ प्रशासन के समक्ष आती हैं, शिक्षको की भागीदारी कहॉ तक पूर्ण होती है और विद्यार्थी जगत इस महत्वपूर्ण कार्य को करने से क्यों वंचित रह जाता है, पुस्तक विकताओं का सहयोग कहॉ और किस प्रकार मिलता हे, उनके व्यवसाय में कहॉ व्यावहारिक कठिनाईयॉ आती है इन्हे अपने ही अनुभवों के आधार पर बताया है साथ ही वर्ष **2008** की गुट ऑफिस कमेटी की रिपोर्ट भी दर्ज है,

ळाक्ष प्राप्ति के बाद की उपलब्धता निष्कर्ष है, सह समाधान भी है और उपजी हुई समस्याओं का निराकरण भी है, इन्हे अध्याय छै में निष्कर्ष और सुझावों के रूप में प्रस्तुत किया गया है,

शोध कार्य के उदेश्य ः

1 . पुस्तकालयाध्यक्षों की वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करना,

2 . पुस्तकालय प्रशासन और प्रबंध में पुस्तकालयअध्यक्षों की कार्य पध्दति की व्याख्या करना, कार्यपध्दति में विशेष रूप से एक प्रशासक के रूप में पुस्तकालयाध्यक्ष पुस्तक परिग्रहण कार्य में किस प्रकार की भूमिका निभाते हैं,

3 . महाविद्यालयीन प्रशासन और प्रबंधन का पुस्तकालय रूझान किस प्रकार का है,

4 . पाठकों को पुस्तकालय किस प्रकार आकृष्ट कर उन्हें श्रेष्ठ साहित्य पढने के लिये प्रेरित करते हैं,

5 . मध्यप्रदेश में वह कौन से चयनित महाविद्यालय है जहॉ श्रेष्ठ पुस्तकों का संकलन है जो उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है,

6 . मध्यप्रदेश का भौगोलिक स्वरूप क्या है जहॉ यह महाविद्यालय बने है,

7 . नये विषयों के पार्दुभाव के बाद पुस्तक परिग्रहण प्रकिया पर पडने वाले प्रभाव क्या है,

8 . सूचना विज्ञान की कांति में परिग्रहण प्रकिया को लेकर पुस्तक विकेता स्वयम को कहॉ पाते है, **9 .** भविष्य में अपने व्यवसाय का कौन सा स्वरूप उन्हे दिखायी पडता है,

10 . पुस्तक परिग्रहण कार्य में पुस्तकालयाध्यक्षों के समक्ष कौन कौन सी समस्याऍ आती है और वे उनका निराकरण करने मे कहॉ तक सफल हुए है,

11 . परिग्रहण प्रकिया में पुस्तकालय समिति के दायित्वों का निर्धारण कैसे और कहॉ तक हो पाया है,

12 . पुस्तकालय प्रशासन को दृष्टि में रखकर पुस्तकालय समिति का व्यावहारिक पहलू किस प्रकार का है ऋ

13 . आवंटित राशि का उपयोग चयनित महाविद्यालय पुस्तकालयों में किस प्रकार हो रहा है,

14 . आवंटित राशि के बारें में पुस्तकालयाध्यक्षों का मत क्या है ऋ

15 . चयनित महाविद्यालयीन पुस्तकालयों की परिग्रहण प्रकिया को स्पष्ट रूप से उल्लेखित करना जिससे भविष्य में तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सकें,

पुस्तक कय करने की भूमिका में पात्र न केवल सुयोग्य पाठक है जो उसके खरीदार है और जिन्हें आज अच्छा साहित्य पढने को मिला रहा है बल्कि वह वर्ग भी है जो पाठको को उनकी पसंदीदा पुस्तकें पंहुचाने में सकिय है और वह वर्ग है पुस्तक विकताओं का, क्या पुस्तक विकेता अपने व्यवसाय से संतुष्ट है, यह सूचना विज्ञान के युग में एक अहम प्रश्न है जो बारम्बार मनःपटल पर आकर इस वर्ग की और सहज ही ध्यान आकृष्ट कर देता है, इसी प्रश्न ने कई विचार उत्पन्न किये हैं और इसी जिज्ञासा ने पुस्तक परिग्रहण प्रकिया पर शोधकार्य करने के लिये मुझे उकसाया है,

पुस्तक परिग्रहण में लायब्रेरियन की क्या भूमिका रहती हैं ऋ क्या सही अर्थो में वे पुस्तकों का चयन कर पाते है ऋ या फिर प्रशासनात्मक अथवा प्रबंधात्मक दवाव में आकार उनकी भूमिका नगण्य ही रह जाती है,

पुस्तक विकेता पुस्तकालयों में पुस्तकें देना अपना व्यवसाय समझते है या फिर उनकी विशेष रूचि उन्हें पुस्तकालयों के द्वार तक पहुंचाने के लिए प्रेरित करती है, किस प्रकार का समायोजन पुस्तक विकता पुस्तकालयों पुस्तकालयाध्यक्षों और पाठकों तथा महाविद्यालय प्रशासन के साथ कर पातें है ऋ ऐसे अनेक अनुत्तरित प्रश्न है जिनके उत्तर खोजने की जिज्ञासा ने मुझे इस विषय पर शोधलर्य ल्रने के लिये प्रेरित किया है,

शोध अध्ययन पध्दति ः

आधुनिक युग में सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में अनुसंधान की प्रकृति काफी वैज्ञानिक और उससे सम्बध्द साधन भी तकनीकि प्रकृति के होते जा रहे है, तथ्य सामग्री का स्वरूप भी उसके अनुकूल होता जा रहा है, विश्वसनीय सूत्रों के अभाव में तथ्य सामग्री भी दोष पूर्ण जाती है अतः आवश्यक है कि तथ्य सामग्री प्राप्त करने वाले स्त्रोतों का सही चयन किया जाये,

प्राथमिक स्त्रोतो के रूप में प्रश्नावली साक्षात्कार और अनुसूची का उपयोग किया गया है वही द्वैतियक स्त्रोत के रूप में महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिकाऍ समाचार पत्रों की कतरने मानाचित्र और कैमरे का उपयोग शोधकार्य को पूर्ण करने के लिये किया गया है,

उपकल्पना (Hypotheses) :-

पुस्तकालयाध्यक्षा के रूप में कार्य करते हुए मैने पुस्तकालय प्रशासन के प्रशासनिक स्वरूपों को बहुत करीब से परिवर्तित होते देखा है वही पुस्तक विकेताओं की स्थिति को भी भलीभांति परखा है, एक समय था जब पुस्तकालयों में पुस्तक खरीदाने के लिये अपार धनराशि आवंटित की जाती थी और समस्या यह रहती थी कि निर्धारित समय में अच्छी पाठ्य सामग्री खरीदकर उनका सदुपयोग किस प्रकार किया जावे ऋ पुस्तक व्यापारियों का सैलाब महाविद्यालय प्रांगण में उमडता हुआ देखा जा सकता था, पहले आओ पहले पाओ की बात सच होती देखी जा सकती थी,

एकदो दिन के मेले लागकर पुस्तकें खरीदी जाती थी और पुस्तक व्यापारियों में परस्पर होड लगी रहती थी कि कौन कितने अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराता है,

इस अवधि में कुछ मार्मिक प्रसंग भी देखने को मिलते थे, वह यह कि कुछ मजबूर पुस्तक विकेताा अपनी रोजी रोटी के लिये भरी दोपहर में पुस्तकों का गट्ठा सायकाल पर बांधकर अपना भाग्य अजमाने चले आते थे और तब उनके चेहरे पर आशा और विश्वास की यह झलक रहती थी कि निश्चित तौर पर आज उनका सौदा पट जायेगा, कभी किस्मत साथ देती थी तो कभी निराशा हाथ आती थी,

समय के साथ परिवर्तन आया और पुस्तक विकेता जगत्में ठेकेदारी प्रथा ने जन्म लिया जहॉा पुस्तके सप्लाय करने के लिए प्रबंधक वर्ग ने एक विशेष पुस्तक विकेता को नियुक्त किया जबकि सच्चाई यह है कि ज्ञान जगत्खुली पुस्तक प्रतियोगिता की मांग करता है, इस प्रथा से एक ही पुस्तक विकेता का महत्व बढा जिस कारण आवंटित धनराशि खर्च करने में कठिनाई आने लगी, स्थितियॉ विषम हुई पुस्तकालयों का ढांचा चरमराया परिणाम स्वरूप वांच्छित पुस्तकें प्राप्त करने में देरी होने लगी,

अपने कार्यकाल में इसी अनुभव ने मुझे झकजोरा और इसी उपकल्पना ने उस दीपस्तंभ का कार्य किया जो मेरे शोध में लक्ष्य को प्रकाशवान करेगा,

निष्कर्ष और सुझाव ः

अपनी कलम से इस अंतिम पडाव पर पहुंचने से पूर्व पुनः वह समय स्मरण हो आया जब एक लायब्रेरियन के पद पर पदस्थ हुई थी, मुझसे पूर्व यह पद रिक्त था

Indian Streams Reserach Journal
Vol.1,Issue.XII/*Jan;* 2012

और मैं अनुभवहीन थी। यह एक विकराल समस्या थी जो चुनौती बनकर इर्दगिर्द धूम रही थी। यहीं आकर पुस्तकालय प्रशासन का प्रथम अध्याय सीखा था और आज इस मुकाम पर पहुंची हूं जहॉ लायब्रेरी का पूर्ण स्वरूप यथा संचालित व्यवस्था उसमें निहित कमियॉ पर्गपग पर आने वाली समस्याऍं उनके कारण समस्याओं का समाधान न होने के कारण पाठक पुस्तक पुस्तक विक्रेता इत्यादि मेरे समक्ष सचित्र खडे हैं और निष्कर्ष स्वरूप उन्ही ज्वलन्त समस्याओं को उकेर कर सुझाव पक्ष रखने का साहस बटोर पायी हूँ।

निष्कर्ष :

1 . चयनित महाविद्यालयीन पुस्तकालयों मे लायब्रेरियन्स को व्यापक अनुभव प्राप्त है।

2 . कतिपय पुस्तकालय भवनों की स्थिति दयनीय है जो एक छोटे से अंधेरे कक्ष में संचालित होकर पुस्तकालय के महत्व के व्यवहारिक पक्ष का उपहास कर रहे है।

3 . कुछ पुस्तकालय ही अर्धकम्प्युटीरिकृत है जो नही है वहॉ दशमलव वर्गीकरण प्रणाली और सूचीकरण के लिये एग्लो अमेरिकन केटलागिंग रूल्स प्रयोग में लाये जा रहे है।

4 . संदर्भ सेवा का रूप कहीं कहीं पूछताछ केन्द्र के रूप में नजर आया है।

5 . डॉ . रंगनाथ कृत पंचमूलभूत सिध्दान्तों से अधिकांश लायब्रेरियन संतुष्ट नही हैं उनका कहना है कि सिध्दांत और व्यवहार में बहुत अन्तर है।

6 . पुस्तकालयाध्यक्षों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होता है।

7 . पर्याप्त स्टॉफ को लेकर भी समस्या दिखी।

8 . व्यवसायिक उदेश्य से गठित महाविद्यालषिन पुस्तकालयों में पाठको की भीड तुलनात्मक रूप से अधिक दिखी।

9 . पुस्तक खरीदने के लिये राशि बढाने की मांग अधिकांश लायब्रेरियन ने की।

10 . अधिकांश पुस्तकालय कोटेशन पध्दति के आधार पुस्तकें कय करते है।

11 . पुस्तक खरीदी मे कतिपय कॉलेजो में प्रबंधक वर्ग की मनमानी भी देखने में आयी।

12 . पुस्तके खरीदने की प्रकिया में पुस्तक विकेताओ की चतुराई भी सामने आयी जो आदेशित पुस्तकों के ढेर में कुछ अनादेशित पुस्तकें रखकर कठिनाई उत्पन्न करतें हैं।

13 . नये कव्हर पेज के साथ पुराने संस्करण की पुस्तकें भी सप्लाय हो जाती है।

14 . छपे हुए पुस्तक मूल्य पर स्टीकर लगाकर मनमाना दाम वसूलते हैं ऐसी स्थिति में पुस्तकालयाध्यक्षों की सतर्कता से होने वाली गलतियों को रूकते हुए भी देखा।

15 . महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिकाओं ने शोधकार्य में गाइड की भूमिका निभायी।

निष्कर्षस्वरूप में यह कह सकती हूँ कि भव्य पुस्तकालय भवन के प्रशासनतंत्र को सकारात्मक स्वरूप प्रदान करते हुए लायब्रेरियनकी गरिमा को बनाये रखते हुंए पाठकों को सविधायें और प्रोत्साहन देते हुए भविष्य में उदित होने वाले नये विषयों को दृष्टि में रखते हुए यदि पुस्तक परिग्रहण कार्य किया जायेगा तो वह समय दूर नही जब मध्यप्रदेश के महाविद्यालयीन पुस्तकालय सर्वोच्च शिखर पर होंगे।

सुझाव :

व्यवहारिक धरातल पर पग पडते ही सुझावो में भी सूक्ष्मता परिपक्वता निष्पक्षता स्वयं ही दिखायी पडने लगती है और कार्य सरल से सरलतम की और बढाने लगता है।

मध्येप्रदेश के चयनित महाविद्यालयीन पुस्तकालयों का अवलोकन एवं जानकारी प्राप्त करने के पश्चात यह अनुभव है कि कुछ पुस्तकालयों को छोडकर अधिकांश में सुधारों की वहुत गुंजाइश है विश्वास है मेरे द्वारा दिये गये सुझाव न केवल शोध की औपचारिकता बनकर रह जायेगें बल्कि कार्यरूप में परिणित होंगें तभी इस प्रयास को में अपनी उपलब्धि कह पाउंगी।

1 . पुस्तकालय प्रशासन में पुस्तकालयाध्यक्षों की स्थिति सदृढ होनी चाहिए।

2 . पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति सकारात्मक सोच को बढावा मिलना चाहिये।

3 . पुस्तकालय समिति द्वारा पूर्ण सहयोग किया जाना चाहिये।

4 . पुस्तक चयन कार्य में विवादित स्थिति उत्पन्न होने पर पुस्तक चयन या निरस्त करने का अधिकार पुस्तकालअध्यक्ष के पास ही सुरक्षित हो।

5 . पुस्तक परिग्रहण कार्य में पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका महॅवपूर्ण हो।

6 . पुस्तक परिग्रहण नियम में कुछ शिथिलता लायी जावे।

7 . पुस्तक चयन हेतु क्षेत्र में विस्तारशीलता होनी चाहिये।

8 . पुस्तक परिग्रहण कार्यो में ठेकेदारी प्रथा को समाप्त किया जाये।

9 . अनुदान राशि का पूर्ण सदुपयोग हो।

10 . ज्ञान जगत में उदित होन वाले विषयों के लिये अनुदान राशि का कुछ भाग पुस्तक परिग्रहण हेतु सुरक्षित अवश्य रखा जाये।

11 . पाठयकम पर आधरित पुस्तकों के साथ साथ संदर्भ ग्रंथ संदर्भ पुस्तकें शोध पकिाऍं इत्यादिका परिग्रहण भी अधिकाअधिक हो।

12 . गाइड़ कुंजी सीरिज जैसी पाठय सामग्री पूर्ण रूपेण वर्जित की जाये।

13 . समर्यसमय पर पुस्तक प्रदर्शनियों मेलों का आयोजन महाविद्यालय प्रागण में किया जावे जिससे एक और पाठकों को अति आधुनिक विषयों की जानकारी सुलभ हो सकेगी वही दूसरी और वे पुस्तकों के प्रति आकृष्ट हो सकेंगे।

14 . पुस्तक चयन और परिग्रहण कार्यो में गुडऑफिस कमेटी द्वारा निर्धारित नियमों का पालन अनिवार्य रूप से किया जावे।

15 . पुस्तक विकेताओं का भुगतान समय पर किया जावे।

16 . भुगतान की प्रकिया जटिल न हो।

17 . पुस्तक परिग्रहण करते समय पुस्तक संस्करण पुस्तक मूल्यों पुष्ठो का निरीक्षण सूक्ष्मता से कर लिया जावे क्योकि एक बार महाविद्यालय की मोहर लगने पर पुस्तक विकेताओ को ऐसी पुस्तकें लौटाना कठिन होता है परिणाम स्वरूप अवांछित पाठयसामग्री आ जाती है जिससे समय और धन दोनो का अपव्यय होता है।

18 . पुस्तके पिरियाडिक्लस चयन और परिग्रहण करते समय पूर्ण परामर्श से कार्य किया जाये।

19 . महाविद्यालय प्रशासन द्वारा इन्टरलायब्रेरी लोन सिस्टम को प्रोत्साहित किया जाये जिससे एक महंगी पुस्तक यदि किसी कॉलेज लायब्रेरी ने खरीदी है तो दूसरी कॉलेज लायब्रेरी दूसरी मंहगी पुस्तकें खरीदे और फिर परस्पर आदान प्रदान की प्रकिया द्वारा अधिकांश पाठकों को लाभान्वित करे। इससे प्राप्त अनुदान राशि का सदुपयोग हो सकेगा।

20 . पुस्तकालयों में आधुनिक उपकरण लगाये जाये।

21 . पर्याप्त स्टॉफ कर्मचारी हो जो सेवाशर्तो के आधार पर पूर्ण प्रशिक्षित हो।

22 . पुस्तकालयाध्यक्षों के रिक्त पद शीध्र भरे जाये।

23 . पुस्तकालय अधिनियम शीध्र लागू हो।

24 . पुस्तकालय भवन सुव्यवस्थित सुनियोजित और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुकूल हो।

उपरोक्त सभी सुझावों के परिपालन से यह अपेक्षा करती हूँ कि एक और जहॉं पुस्तकालय प्रशासन सदृढ होकर गौरनवित होगा वही दूसरी और पुस्तक परिग्रहण कार्यो को नई दिशा प्राप्त हो सकेगी।